हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A, Part I

विषय - भक्तिकाल का महत्व :—

भक्ति-आन्दोलन का जन्म मुसलमानों के आने के पूर्व दक्षिण में हो चुका था। दक्षिण के आलवार भक्त प्रसिद्ध हैं। उस समय भारत में वज्रयानी और नाथ-पंथ योगियों की विचारधारा का प्रचार था। दक्षि भारत का आन्दोलन भगवान लीला रूप ले आया, जिसमें भक्ति और प्रेम प्रधान थे कोई भी उसका आनन्द उठा सकता था। भक्ति ने टूटते हुए हिन्दू समाज को संभाल लिया। मुसलमानों के आगमन से उप एक नवीन परिस्थिति के कारण उत्तर भ में उसका अधिक प्रचार हुआ और संत (कबीर) सूफी (जायसी) तथा वैष्णव (सू कवियों ने अपनी स्निग्ध वाणी द्वारा भक्ति का संचार कर उसकी रक्षा कि

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध अनेक धार्मिक सुधारकों, जैसे - दा

हिन्दी जनता की मानसिक एवं आध्यात्मिक पिपासा शांत हुई। सिखों के 'गुरुग्रंथ साहब' का संग्रह भी इसी समय हुआ। इस काल में हिन्दी भाषा और संस्कृति सन्धिकालीन परिस्थिति से निकल कर अपने वास्तविक रूप में स्थापित हुई। ब्रजभाषा और अवधी जैसी जनता की भाषाएँ साहित्य के सिंहासन पर आसीन हुईं और महाकवियों के हाथ में पड़कर उनका पूर्ण विकास हुआ। ब्रजभाषा और अवधी के जायसी सूर, तुलसी, केशव, मीरा आदि अनेकानेक कवि हुए और कबीर की वाणियाँ, जायसीकृत पद्मावत, सूरसागर, रामचरितमानस, मीरा पदावली आदि उच्चकोटि की रचनाओं का निर्माण हुआ।

कृष्ण-भक्ति आन्दोलन के कारण ब्रजभाषा की अभिव्यंजनात्मक शक्ति ही नहीं बढ़ी वरन् आगे चलकर उसका कलात्मक शृंगार भी हुआ। पद-शैली, दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया आदि अनेक साहित्य-शैलियों का जन्म हुआ। इस समय हिन्दी में गीति की प्रमुखता भी मिलती है। इन्हीं सब कारणों से इस युग विशेषतः 16 वीं

और 14 वीं शताब्दी को स्वर्ण-युग भी
जाता है। इतिहास की दृष्टि से यह मुगलकाल
था और भारत का यूरोपीय लोगों से सम्पर्क
स्थापित होना प्रारम्भ हो गया था। इसी समय
अपभ्रंश की कोख से जन्मी भाषा के स्थान
पर ब्रजभाषा का सहज रूप सामने आया।

उत्तर भारत का भक्ति-आन्दोलन :— यहाँ भी
साधारण जनता के भीतर जो धर्म-भावना
वर्तमान थी, उसने शास्त्र की अंगुली पकड़कर
अपने को शक्तिशाली रूप में प्रकट किया
उत्तर भारत में पौराणिक धर्म का प्रचार पहले
से ही था। भक्ति के लिए जो बात नितान्त आव
है, वह है भगवान के ऐसे रूप की कल्प
जिसके साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित किया जा
सके। उत्तर भारत की जनता विष्णु के वि
अवतारों अवतारों में विश्वास करती थी। यह
महाभारत के पुराने अंशों से पता चलता
कि विष्णु के दस ही अवतार माने जाते थे,
धीरे-धीरे यह संख्या बढ़ा तक पहुँच
मध्ययुग के सबसे अधिक प्रभावशाली
भागवत में अवतारों की संख्या 24 तक
गई।

इस युग में अवतार को मानने वाली दृष्टि में थोड़ा परिवर्तन भी हुआ। पहले विश्वास किया जाता था कि भगवान दुष्टों के दमन और साधुओं के परित्राण (उद्धार) के लिए अवतार धारण करते हैं। इस काल तक आकर यह विश्वास किया जाने लगा है कि भगवान के अवतार का मुख्य हेतु भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए लीला का विस्तार करना है।

हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G. Sem II

विषय — भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य का विकास का शेष भाग :— प्रेस के स्थापित होने से गद्य के प्रचार प्रसार में बहुत सहायता मिली। आधुनिक युग का सूत्रपात हो रहा था। साहित्य में रीतियुगीन शैलियाँ त्यागी जाने लगी थी। इस काल में ~~ब्रजभाषा~~ ब्रजभाषा के ग्रन्थों के आधार पर पद्य ग्रन्थ विशेषतः लिखे गये। और संस्कृत फारसी अरबी के आधार पर भी जब-तक हिन्दी में ग्रन्थ अनूदित किये गये, इन्हें अनुवाद संभवतः नहीं कहा जा सकता।

इस काल के आरम्भ में ब्रजभाषा के ग्रन्थों के आधार पर गद्य-ग्रन्थ लिखे गये। इस काल में हमें जिन संस्थाओं और व्यक्तियों से गद्य रचना में ~~के~~ योगदान मिला, जो निम्नलिखित है :—

(1) मुक्त रचनाएँ : व्यक्तिगत विनोद में जैसे 'इंशा अल्ला खाँ' की रानी केतकी की कहानी।

(2) फोर्ट विलियम कॉलेज के लल्लू लाल जी आदि द्वारा विदेशियों के लिए। किन्तु यहाँ के 'प्रेम सागर' भारत में भी लोकप्रिय हुआ।

(3) कुछ सोसाइटियों द्वारा स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें।

(4) ईसाई मिशनरियों द्वारा बाइबिल आदि का अनुवाद।

(5) समाचार पत्रों द्वारा हिन्दी का प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' था।

(6) राजनीतिक और निजी पत्रों द्वारा गद्य रचना।

इन माध्यमों से गद्य में आवश्यकतानुसार ही साहित्य रचा गया पर खड़ी बोली और उसका गद्य रूप प्रतिष्ठित अवश्य हो गया। इनमें ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें लिखी जाने लगीं तथा शिक्षा के प्रसार का भी

कार्य हुआ। जनता को शिक्षित बनाने की ओर ध्यान दिया गया। यह अनिवार्य भी था। यह नवजागरण जब जनता के द्वार तक पहुँच सका था। अंग्रेजी साम्राज्य के पैर जम चुके थे। इस काल में ब्रह्म समाज तथा आर्य-समाज आदि का प्रादुर्भाव हो सका था, उसकी अतीत की ज्ञान-गरिमा का नया संस्करण और नई अवस्थाएँ उभर रही थी। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी 'दयानन्द सरस्वती' इस नवजागरण में हिन्दी की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण थे। 'राजा शिवप्रसाद सितारे' 'हिन्द' ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कार्य किया। उन्होंने हिन्दी-गद्य के विकास में भी पूरा-पूरा योगदान दिया। पाठ्यपुस्तक के रूप में 'सितारे हिन्द' ने जो गुटका तैयार किया था भारतेन्दु ने उसी से हिन्दी सीखी थी। इसी कारण वे राजा शिवप्रसाद को अपना गुरु मानते थे। इस प्रकार राजा शिवप्रसाद एक बड़ी थे जो फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दी गद्य

काल को भारतेन्दु से जोड़ सके थे। वे पहले उस भाषा के पक्षपाती थे जो जनता की भाषा थी। वे मानते थे कि हिन्दी अपनी निजी रूप में ही बिना अन्य भाषाओं की सहायता लिए लिखी जानी चाहिए और उसी रूप का महत्व मिलना चाहिए। 'शकुन्तला' नाटक के अनुवाद से इन्होंने हिन्दी का अपना यह दावा सिद्ध किया। इस प्रकार गद्य-शिक्षा के कई रूप बने। तभी भारतेन्दु जी का पदार्पण हुआ और भारतेन्दु-युग का प्रवर्तन हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सर्वतोमु हिन्दी के युग पुरुष थे।